पुत्र पिता की बुद्धि के रूप में

पुत्र की बुद्धि की प्रशन्सा करने के लिए, पहले हमें उसे पिता की बुद्धि के रूप में देखना चाहिए। पिता की बुद्धि सर्वप्रथम हमें सृष्टि की रचना में दिखाई गई है। परमेश्वर पुत्र अनन्तकाल में से आया, जो उस परमेश्वर की अभिव्यक्ति है जिसने संसार, हमारी सृष्टि व समय को अस्तित्व प्रदान किया है।

जैसे नये नियम में सिखाया गया

जो कुछ परमेश्वर ने ''पहले'' प्रकट किया, उसे समझने के लिए उसके द्वारा प्रकट ''अन्तिम'' की समीक्षा करते हुए आइये देखें कि आरम्भ से पहले क्या था। इसे हम सृष्टि से पहले नये नियम के परिप्रेक्ष्य में परमेश्वर की बुद्धि के रूप में यीशु की परख करते हुए देखेंगे।

नया नियम संकेत देता है कि परमेश्वर की बुद्धि समय के आरम्भ होने से पहले ही और ''महिमा के प्रभु'' के क्रूसारोहण से किसी भी प्रकार अलग नहीं थी:

> फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं: परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होने वाले हाकिमों का ज्ञान नहीं। परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया। जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखा, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की हैं। परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, बरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है (1 कुरिन्थियों 2:6-10)।

प्रेरितों के काल तक इस अद्‌भुत सच्चाई को कोई नहीं जानता था क्योंकि यह परमेश्वर का वह अप्रकट ''भेद'' था जो पिछले समयों में ''गुप्त'' रहा था। यह प्रकट भेद हमारे लिए आश्चर्य की खिड़कियां खोल देता है। ऊपर लिखित पद समय से पहले से क्रूस तक बने पुल का संकेत देते हैं। इस पुल के ''भव्य उद्‌घाटन'' के समय परमेश्वर की बुद्धि यीशु में दिखाई

गई थी।

परमेश्वर की बुद्धि के रूप में यीशु की पहचान का संकेत कुलुस्से के मसीहियों के नाम पौलुस की पत्री में दिया गया है। किसी ऐसी ''बुद्धि'' की शिक्षा देने वाले कुछ शिक्षक उन्हें मसीह और उसके काम विशेषकर सृष्टि तथा छुटकारे के काम के विषय में उलझा रहे थे।[1] पौलुस ने यह ज़ोर देते हुए कि परमेश्वर का भेद अब प्रकट किया गया है, उत्तर दिया कि, ''[मसीह] में *बुद्धि* और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं'' (कुलुस्सियों 2:3)।

पौलुस मसीह के विषय में इस प्रकार बात करके, यह नहीं कह रहा था कि मसीह केवल परमेश्वर की बुद्धि का भंडार है बल्कि वह यह ऐलान कर रहा था कि परमेश्वर की तरह ही, यीशु परमेश्वर की बुद्धि है जिसे अब पूरी तरह से प्रकट कर दिया गया है। पौलुस ने पहले ही संकेत दे दिया था कि मसीह परमेश्वर का स्वरूप है। इसके अलावा, उसने परमेश्वर के पुत्र के पूर्व-अस्तित्व से पूर्व सृष्टि तक जोर दिया था। मसीह के बारे में सम्पूर्ण बाइबल में सबसे अधिक ज़ोर दिए जाने वाले पदों में से एक कुलुस्सियों 1:16, 17क में उसने इस प्रकार कहा:

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, ...

कुलुस्सियों की पत्री में परमेश्वर की सृजनात्मक बुद्धि के रूप में वर्णित पुत्र केवल परमेश्वर का पुत्र ही नहीं है ; वह परमेश्वर पुत्र है। इस कारण, ''[मसीह] में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलुस्सियों 2:9)। यूनानी शब्द प्लेरोमा (''परिपूर्णता'') कुलुस्सियों की पत्री में पहले मिलता है : ''क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि [मसीह] में सारी परिपूर्णता वास करे'' (कुलुस्सियों 1:19)।

अन्य शब्दों में, परमेश्वर का सार मसीह में वास करता है। परमेश्वर का सार आत्मा है (यूहन्ना 4:24)। नये नियम में कुलुस्सियों 2:9 ही वह एकमात्र स्थान है जहां यूनानी शब्द *थियाट्स* (''ईश्वरत्व'') मिलता है। परमेश्वर की सम्पूर्णता में ईश्वरीयता का पूर्ण स्वभाव (सार) मसीह में मिलता है। निस्संदेह, यह सम्बन्ध अनन्तकालिक है, जो कुलुस्सियों के संदर्भ में ऐतिहासिक यीशु शामिल करता है।[2]

जैसे छुटकारे में दिखाया गया

परमेश्वर की बुद्धि के रूप में यीशु पर विचार करना हमारा सामान्य आरम्भिक बिंदु नहीं है। हम में से बहुतों से यीशु का परिचय परमेश्वर के पुत्र के रूप में करवाया गया था, जो कि व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर पिता के प्रेम, अनुग्रह तथा कृपा के रूप में प्रकट हुआ। पिता का हमसे प्रेम यहां तक दिखाया गया कि हमारे छुटकारे के लिए उसने अपने पुत्र को क्रूस पर भेंट कर दिया था। फिर, परमेश्वर की सामर्थ में जिसने उसे मुर्दों में से जिला दिया

है विश्वास के द्वारा यीशु के प्रति हमारे समर्पण से जी उठने पर वह हमारा उद्धारकर्त्ता बना। शुभ समाचार अर्थात मसीह का सुसमाचार था। मसीह के विषय में देखते हुए, हमें पता चलता है कि वह हमें परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह तथा कृपा से भी अधिक दिखाता है। वह परमेश्वर की बुद्धि भी है जो हम पर स्पष्ट की गई है।

कुरिन्थियों के नाम पत्र लिखते हुए पौलुस ने उन्हें याद दिलाया कि बहुत से लोगों पर परमेश्वर की बुद्धि प्रकट नहीं हुई है क्योंकि वे इसे इसके सही स्थान पर नहीं ढूंढ़ रहे हैं। यहूदी लोग चिह्नों से मूर्ख बन गए थे। वे चमत्कार देखना चाहते थे (मत्ती 12:38, 39)। यूनानी लोग सचमुच बुद्धि की खोज में थे, परन्तु मुख्य रूप से वे दर्शन-शास्त्र के माध्यम से इसे पाना चाहते थे, जिसे पौलुस ने ''इस संसार की बुद्धि'' कहा। फिर इस पृष्ठभूमि के विरुद्ध पौलुस ने कहा था, ''परन्तु हम तो क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो ... परमेश्वर की सामर्थ, और *परमेश्वर का ज्ञान* है'' (1 कुरिन्थियों 1:23, 24)। इस कारण, हमारे लिए उद्धार की परमेश्वर की योजना के द्वारा, मसीह ''परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा'' (1 कुरिन्थियों 1:30ख) बना। इसलिए, छुटकारे के अपने काम में पुत्र पिता की बुद्धि को दिखाना है।

जैसे सृष्टि की रचना में दिखाया गया

परमेश्वर ने न तो कभी मूर्खतापूर्ण कार्य किया है न मूर्खता की बात, क्योंकि वह सर्वज्ञ है और सब कुछ जानता है। सारी शक्ति का स्वामी होने के अपने स्वभाव की तरह सबसे बुद्धिमान होना भी उसका स्वभाव है। इसलिए, यीशु अर्थात उसके पुत्र में परमेश्वर की बुद्धि को देखकर हमें चकित नहीं होना चाहिए। वह परमेश्वर की बुद्धि का प्रकट रूप (प्रकाशन) है जो अनन्तकाल में सृष्टि की रचना में उसके साथ था, और अब इतिहास में उसे प्रकट किया गया है।

अब जबकि हमने यीशु में परमेश्वर की बुद्धि को ''बहुत निकट'' से देख लिया है, तो आइये संसार की सृष्टि के उस यादगारी समय में ''पीछे मुड़कर'' देखें। बुद्धि वहां भी है! क्या इससे हम हैरान होते हैं? निश्चय ही नहीं। परमेश्वर के स्वभाव के दृष्टिकोण से (कि वह सबसे बुद्धिमान है), और यीशु में परमेश्वर की बुद्धि के रूप में बाद के प्रकाशन की रोशनी में (नया नियम), निश्चय ही सृष्टि की रचना से पहले भी बुद्धि की उपस्थिति न मिलने पर।

नये नियम की शिक्षाएं यीशु को परमेश्वर की बुद्धि से जोड़ती हैं। उसमें पाई जाने वाली सच्चाइयां दिखाती हैं कि परमेश्वर की बुद्धि अनादि है और संसार की सृष्टि में वह सक्रिय थी। स्पष्टतः, नये नियम के लेखकों के परिप्रेक्ष्य में परमेश्वर पुत्र ही परमेश्वर की अनन्त बुद्धि है जिसे हम परमेश्वर की सृष्टि में लगे हुए देखते हैं। उन लोगों की आंखों से देखना जिन्हें पवित्र आत्मा की इतनी गहन अन्तरदृष्टि दी गई, हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है, उनके द्वारा हम ऐसी सच्चाइयों को देखते हैं जिन्हें भविष्यवक्ताओं तथा स्वर्गदूतों को भी पूरी रीति से समझ नहीं पाते थे। (1 पतरस 1:10-12; 2 पतरस 1:19-21)। क्या इसका यह अर्थ है कि परमेश्वर लगातार प्रकाशन देता रहा? हां, इसका यही अर्थ है! यदि बाइबल की

भाषा का कुछ अर्थ है, तो पुराने नियम की अपेक्षा नये नियम में परमेश्वर अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। परमेश्वर का निरन्तर प्रकाशन और हमारे लिए उसकी इच्छा पवित्र शास्त्र में प्रकट कर दी गई है और केवल वहीं पर मिलती है। बाइबल के दोनों नियमों में इसकी पुष्टि हो चुकी है। (व्यवस्था विवरण 4:2; 12:32; नीतिवचन 30:5, 6; प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)। अपने प्रकाशन तथा वचन के प्रति परमेश्वर के लगाव के उदाहरण बार-बार मिलते हैं।

परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त नये नियम के लेखकों के लेखों से, हम उससे अधिक देख सकते हैं जो नीतिवचन 8:22-31 में लेखक ने देखा था। उसने बुद्धि को संसार की सृष्टि में महिमा तथा आनन्द से व्यक्त परमेश्वर के विशेष गुण के रूप में देखा था। हम भी उसे नीतिवचन के इन पदों में देख सकते हैं। बाद में नये नियम के प्रकाशन के लाभ से, हम उस बुद्धि को न केवल किसी कवि के शब्दों में मूर्तिमान होने (बुद्धि) की धारणा, बल्कि परमेश्वर के स्वभाव से (सार) देख सकते हैं, जो मनुष्यों के रूप में प्रकट हुआ। अन्य शब्दों में, हम परमेश्वर पुत्र को संसार की सृष्टि में परमेश्वर की बुद्धि को दिखाते हुए देखते हैं। द *ट्री ऑफ़ लाइ़फ़* के लेखक रोलैंड ई.मर्फी ने कहा था:

> बुद्धि के अधिकार के स्रोत ही सृष्टि की रचना के क्रम के एक से अधिक मूलों का सुझाव देते हैं। बुद्धि को थोड़ा बहुत प्रभु के रूप में जाना है। मादा बुद्धि की पुकार प्रभु की आवाज़ है; वह केवल प्रकृति का स्व-प्रकाशन ही नहीं बल्कि परमेश्वर का प्रकाशन भी है।[3]

परमेश्वर की बुद्धि के रूप में, मसीह सृष्टि तथा संसार के छुटकारे में बुद्धि को प्रतिम्बिबित करता है। ये संबंध बाइबल में हैं ताकि हम उनसे लाभ उठाएं। स्पष्टत:, मसीही लोग निष्कर्ष निकाल सकते हैं, और पौलुस ने यही निष्कर्ष निकाला, कि मसीह परमेश्वर की बुद्धि है (1 कुरिन्थियों 1:24)।

पाद टिप्पणियां

[1]एवरट फग्र्युसन, *बैग्राऊंड ऑफ़ अरली क्रिश्चियेनिटी* (ग्रैंड रैपिड्स मिशी. Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 245-49. [2]कुलुस्सियों 1:20. *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट,* में देखिए गरहर्ड डैलिंग, ''*pleroma.*'' [3]रोलैण्ड इ. मर्फी, द *ट्री ऑफ़ लाइ़फ़,* द एंकर बाइबल रैफरेंस लाइब्रेरी, सा.सं. डेविड नोयल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1990), 138, 147.